इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय
एक

इब्रानियों की पृष्ठभूमि और उद्देश्य

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. पृष्ठभूमि 1

क. लेखनकार्य 1

1. पहचान 2
2. पार्श्वचित्र 3

ख. मूल श्रोता 5

1. यहूदी 6
2. यूनानी दृष्टिकोणीय यहूदी 6
3. अपरिपक्व 6
4. सताए हुए 7
5. स्वधर्मत्याग के निकट होना 9

ग. तिथि 9

III. उद्देश्य 10

क. उपदेशों की तीव्रता 11

1. आवृत्ति 12
2. अलंकारिक शैली 12

ख. उपदेशों का लक्ष्य 14

1. स्थानीय शिक्षाओं को अस्वीकार करना 14
2. यीशु के प्रति विश्वस्त बने रहना 17

IV. सारांश 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इब्रानियों की पुस्तक

अध्याय एक

इब्रानियों की पृष्ठभूमि और उद्देश्य

परिचय

मसीह के अनुयायियों को पूरे इतिहास में सताव का सामना करना पड़ा है। असँख्य मसीही विश्वासियों के सामान की चोरी का होना, उन्हें मारा पीटा जाना, कारावास में डाला जाना और शहीद होना ही उनका भाग्य रहा है। ये कुछ वर्णन हैं कि, मसीह के अनुयायी हमारे दिनों में किसी भी समय से ज्यादा सताए जाते हैं।

हममें से जो इन तरीकों से दुखों को नहीं उठा रहे हैं, उनके लिए सताव से आने वाली परीक्षाओं की कल्पना करना अत्यन्त कठिन है। मसीही विश्वासी जो शान्ति और सुरक्षा में जीवन यापन करते हैं अक्सर अपने विश्वास के साथ यहाँ तक कि बिना किसी खतरे के होते हुए भी समझौता कर लेते हैं। परन्तु आप यह कल्पना कर सकते हैं कि उन बातों के साथ समझौता करना कितना अधिक परीक्षा में डालना होगा जिन बातों के द्वारा आप यह विश्वास करते हैं कि आप स्वयं को, अपने जीवन साथी को, अपने बच्चों को और अपने निकट के मित्रों को गम्भीर नुक्सान से सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं? कैसे हम सम्भवत: इन परिस्थितियों में हमारे साथी विश्वासियों को उत्साहित कर सकते हैं?

यही वे चुनौतियाँ हैं जिन्हें इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने सामना किया। उसने मसीही विश्वासियों के एक ऐसे समूह को यह पत्र लिखा जिन्होंने अतीत में दुख उठाया था और वे अब और भी ज्यादा सताव के आने के खतरे में थे। उन्होंने अतीत के वर्षों में अच्छा जीवन व्यतीत किया था, परन्तु इब्रानियों के लेखक को यह डर था कि वे अब आने वाले सताव से बचने के लिए मसीह का परित्याग कर सकते हैं।

यह *इब्रानियों की पुस्तक* के ऊपर लिखी हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है, और हमने इसे, "इब्रानियों की पृष्ठभूमि और उद्देश्य" के नाम से शीर्षक दिया है। इस अध्याय में, हम कुछ ऐसे दृष्टिकोणों से परिचित कराएंगे जिन्हें इस जटिल पुस्तक की हमारी व्याख्या में हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए।

जैसा कि यह शीर्षक सुझाव देता है कि, हम इब्रानियों की पुस्तक की पृष्टभूमि और उद्देश्य के ऊपर दो तरीकों से देखेंगे। सर्वप्रथम, हम पुस्तक की पृष्टभूमि के ऊपर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम उस व्यापक उद्देश्य को सारांशित करेंगे जिसके लिए इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी। आइए इब्रानियों की पुस्तक से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण पृष्टभूमिक विषयों के संक्षिप्त वर्णन से आरम्भ करें।

पृष्ठभूमि

हम इब्रानियों की पृष्टभूमि की खोज तीन परस्पर सम्बन्धित विषयों पर विचार करते हुए करेंगे। हम सर्वप्रथम इसके लेखनकार्य के ऊपर ध्यान देंगे। फिर हम मूल श्रोताओं की खोज करेंगे। अन्त में, हम उस तिथि की जाँच करेंगे जिसमें इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी। आइए सर्वप्रथम इब्रानियों के लेखनकार्य के ऊपर ध्यान दें।

लेखनकार्य

आरम्भिक समयों से ही, इब्रानियों के पत्र के लेखनकार्य के ऊपर विभिन्न तरह के विचार मिलते हैं। हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, हम दो विषयों को ही स्पर्श करेंगे। पहला, हम लेखक की पहचान के ऊपर विचार विमर्श

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

करेंगे। और दूसरा, हम इस पुस्तक के कुछ गुणों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए लेखक के एक पार्श्वचित्र को बनाएंगे। आइए हम लेखक की पहचान की खोज से आरम्भ करें।

पहचान

इब्रानियों के लेखक की पहचान करना इतना सरल नहीं है जैसा कि नए नियम की कई अन्य पुस्तकों के साथ है क्योंकि इसके लेखक ने स्वयं की पहचान नहीं कराई है। आरम्भ में ही प्रेरितों की अवधि के पश्चात् धर्माध्यक्षीय अवधिकाल में, सिकन्दरिया का क्लेमेंट, जो कि लगभग 150 से 214 ईस्वी सन् में रहा, और सिकन्दरिया का ओरेगन, जो लगभग 185 से 254 ईस्वी सन् में रहा, ने यह स्वीकार किया है कि उनके दिनों में इब्रानियों के लेखक के बारे में विभिन्न तरह के विचार विद्यमान थे। इससे शीघ्र ही, प्रेरित पौलुस ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसके नाम को इसके लिए सबसे ज्यादा उपयोग किया गया है, परन्तु विद्वानों ने बरनबास, लूका, अपुल्लोस और यहाँ तक कि रोम के क्लेमेंट के होने का भी सुझाव दिया है।

लगभग 325 ईस्वी सन् में, कलीसियाई इतिहासकार यीसुबियस ने अपनी पुस्तक *कलीसिया का इतिहास* में पुस्तक कम्रांक 6 के, अध्याय 35 के, खण्ड 14 में ओरेगन के दृष्टिकोण को संदर्भित किया है। जहाँ उसने ऐसा लिखा है कि:

> **परन्तु अब [इब्रानियों के] पत्र को किसने लिखा है, परमेश्वर इस विषय में सत्य को जानता है।**

ओरेगन की टिप्पणी यह प्रकाशित करती है कि वह और उसके दिनों में कई अन्य कितने अधिक इस विषय पर अनिश्चित थे। और ऐसा बहुत से विद्वानों के साथ आज भी है। केवल परमेश्वर ही निश्चित जानता है कि किसने इस पुस्तक को लिखा है।

दुर्भाग्य से, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के बारे में प्रश्न और जिस तरह से कुछ भ्रान्त शिक्षाओं वाले समूहों ने इसका दुरूपयोग किया है, ने धर्माध्यक्षीय अवधिकाल में कुछ लोगों को सन्देह में डाल दिया कि क्या इब्रानियों की पुस्तक को नए नियम के कैनन अर्थात् मापदण्ड में सम्मिलित किया जाना चाहिए या नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, उल्लेखनीय विद्वान जैसे रोम का क्लेमेंट, जिसकी मृत्यु लगभग 99 ईस्वी सन् के आसपास हुई, ने इब्रानियों की पुस्तक को नए नियम की अन्य पुस्तक की समानता में ही माना। और युस्तीन शहीद, जो लगभग 100 से 185 ईस्वी सन् के आसपास रहा, ने भी ऐसा ही किया। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक दोनों अर्थात् मरसोनाईट मापदण्ड, जो कि लगभग 144 ईस्वी सन् में लिखा गया, और मारटोरीयन मापदण्ड, जो कि लगभग 170 ईस्वी सन् में लिखा गया था, में जोड़ने से छोड़ दिया। तथापि, धर्माध्यक्षीय अवधि के अन्त तक, पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया में प्रभावशाली व्याख्याकारों के बहुमत ने इब्रानियों को मापदण्ड के एक हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया था। और वे सामान्य तौर पर प्रेरित पौलुस को इसके लेखक होने के लिए सहमत थे।

पूरे मध्यकालीन अवधि में, ज्यादातर अग्रणी विद्वानों ने निरन्तर यही विश्वास किया कि पौलुस ने इब्रानियों को लिखा था। परन्तु धर्मसुधार के मध्य, प्रोटेस्टेंट धर्मसुधारकों ने बहुत सी कलीसियाई परम्पराओं के ऊपर प्रश्न किया, जिसमें पौलुस का लेखक होने का पारम्परिक दृष्टिकोण भी सम्मिलित है। मार्टिन लूथर ने सुझाव दिया कि अपुल्लोस इसका लेखक था। जॉन कॉल्विन ने किसी भी विकल्प का सुझाव नहीं दिया, अपितु उसने जोर दिया कि यह पुस्तक पौलुस की ओर से आई हुई नहीं हो सकती है।

आज, व्याख्याकारों का एक विशाल बहुमत पौलुस के लेखक होने को अस्वीकार कर देते हैं। हम इस विचारधारा के ऊपर तीन कारणों को स्पर्श करेंगे। सर्वप्रथम, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया, इस पुस्तक का लेखक अपरिचित है, और यह पौलुस की प्रथा यह रही है कि वह अपने पत्रों में अपना नाम देता था। सच्चाई तो यह है कि, जैसा कि 2 थिस्सलुनीकियों 2:2 स्पष्ट करता है, पौलुस को इस बात की गम्भीर रूप से चिन्ता थी कि उसके नाम से जालसाजी फैल चुकी थी। इसलिए, ऐसा सम्भव नहीं दिखता है कि यदि उसने इब्रानियों के पत्र को स्वयं लिखा होता तो वह अवश्य ही इसके प्रति अपनी पहचान देता।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दूसरा, इब्रानियों की पुस्तक ऐसे विषयों के ऊपर जोर देती है जिनके प्रति, यदि कोई है तो, पौलुस के पत्रों में ध्यान नहीं दिया गया है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों का लेखक मलिकिसिदक का उल्लेख तीन बार करता है। वह पुराने नियम के मिलाप वाले तम्बू की ओर ध्यानाकर्षित करता है। और वह मसीह के महायाजक होने के बारे में विस्तार से ध्यान देता है। इन सभों को इकट्ठा करने पर, यह विषय इब्रानियों की पुस्तक को उन पुस्तकों से अलग करती है जिन्हें हम जानते हैं कि पौलुस ने लिखा है।

तीसरा, पौलुस का इसके लेखक होने के प्रति सबसे शक्तिशाली कारण उस तरीके में है जिसमें इब्रानियों के लेखक ने स्वयं को यीशु के अनुयायियों की पहली पीढ़ी से दूर किया था। सुनिए इब्रानियों 2:3 के शब्दों को:

> **तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहिले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ (इब्रानियों 2:3)।**

यहाँ पर ध्यान दें कि इब्रानियों का लेखक उल्लेख करता है कि कैसे उद्धार "पहिले-पहल प्रभु के द्वारा चर्चा किया गया" – दूसरे शब्दों में, स्वयं यीशु के द्वारा – और "सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ।" अर्थात्, लेखक और उसके श्रोताओं ने उस सुसमाचार को सुना जिसे उन लोगों के द्वारा सत्यापित किया गया जिन्होंने यीशु को परोक्ष में सुना था। लेखक का यह स्वीकार करना कि उसने मसीही विश्वास को द्वितीय स्तर पर प्राप्त गलतियों 1:1, 11 और 12, और 1 कुरिन्थियों 11:23 जैसे संदर्भों के विरोधाभास में है जहाँ पर पौलुस यह जोर देता है कि उसने सुसमाचार को सीधे ही यीशु से प्राप्त किया था।

> **इस प्रश्न का छोटा उत्तर कि, "किसने इब्रानियों की पुस्तक को लिखा था?" यह है कि, हम इसे नहीं जानते हैं। हमारे पास कुछ सुराग हैं कि वह कौन था। पूरे कलीसियाई इतिहास में इस प्रश्न के कई उत्तर पाए जाते हैं। इस कारण, बहुत वर्षों तक कलीसिया ने यही सोचा कि पौलुस ने ही इसे लिखा था। मैं सोचता हूँ कि शायद पौलुस ने इसे नहीं लिखा क्योंकि इब्रानियों और पौलुस के पत्रों में बहुत सी भिन्नताएँ हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस अक्सर...स्वयं की पहचान कराता है और तब वह पत्र को लिखने वाले को सम्बोधित करता है। इब्रानियों में ऐसा नहीं किया गया है। इब्रानियों में मसीह महायाजक के रूप में है जैसे विषय मिलते हैं जो कि अधिकतर पौलुस के पत्रों में दिखाई नहीं देते हैं। इसलिए, हो सकता है कि पौलुस इसका लेखक न हो। अन्य सुझाव बरनबास या अपुल्लोस के लिए दिए गए हैं, - मार्टिन लूथर ने यह सोचा कि हो सकता है कि ये अपुल्लोस – प्रिस्का था। परन्तु तथापि, हम बस नहीं जानते हैं। मैं सोचता हूँ कि ज्यादा से ज्यादा हम यह कह सकते हैं कि इब्रानियों का लेखक दूसरी-पीढ़ी का विश्वासी रहा होगा। अध्याय 2 में वह उनकी ओर संकेत करता है जिन्होंने मसीह से सुना और फिर जो कुछ उन्होंने मसीह से सुना था उसे उन्होंने अन्यों को सुना दिया, इसलिए ऐसा जान पड़ता है कि वह स्वयं को दूसरी पीढ़ी में रख रहा है।**
>
> **- ड़ा. स्टीफन ई. विट्टमेर**

हमने इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के बारे में खोज कर ली है और यह देखा है कि लेखक की पहचान अज्ञात् ही रहती है। परन्तु फिर भी हम कुछ सीमा तक लेखक के एक पार्श्वचित्र का निर्माण कर सकते हैं।

पार्श्वचित्र

समय की कमी के कारण, हम लेखक के जीवन के अपेक्षाकृत दो ही स्पष्ट गुणों की ओर ही संकेत करेंगे।

यूनानी दृष्टिकोणीय यहूदी – सर्वप्रथम, इब्रानियों का लेखक एक यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी था। ज्यादातर विद्वान आज इस बात पर सहमत हैं कि पौलुस ने इब्रानियों को नहीं लिखा। अन्त में, यद्यपि, ओरेगन के साथ यही सार देना उत्तम है कि परमेश्वर ही वास्तव में जानता है। इब्रानियों के लेखक के ऊपर वर्षों से वाद विवाद

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

किया जाता रहा है, परन्तु यह हमें जितना ज्यादा हो सके लेखक और उसके चरित्र के प्रति मूलपाठ में दिए हुए सुरागों से शिक्षण प्राप्त करने से रोकना नहीं चाहिए।

हम मूलपाठ में देख सकते हैं कि दोनों अर्थात् यहूदी और यूनानी दृष्टिकोणों ने लेखक और उसकी पुस्तक को आकार दिया है। लेखक की मजबूत यहूदी विरासत उसके पुराने नियम के ज्ञान से स्पष्ट हो जाती है। सच्चाई तो यह है कि, उसने पुराने नियम से कम से कम अपने 13 अध्यायों में 31 बार उदधृत किया है।

यह भी प्रगट होता है कि लेखक का मजबूत यूनानी दृष्टिकोण के शिक्षण में पालन पोषण हुआ था। अतीत में, व्याख्याकारों ने लेखक के सेप्टुआजिन्त अर्थात् सप्तति अनुवाद, जो कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है, के उपयोग का संकेत किया था, जैसा प्रमाणित है कि वह एक यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी था। तथापि, पिछली शताब्दी के दूसरे आधे हिस्से में, मृतक सागर के कुण्डल पत्रों की खोज ये प्रकाशित करते हैं कि इसमें उदधृत टिप्पणियाँ आरम्भ में ऐसा जान पड़ता है कि परोक्ष में सेप्टुआजिन्त से ली गई हैं, परन्तु हो सकता है कि गैर-पारम्परिक इब्रानियों के मूलपाठ से आई हो। इस कारण, हम निश्चित नहीं हो सकते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने सेप्टुआजिन्त का उपयोग किया है।

परन्तु इस खोज के आने के बाद भी, हम फिर भी दृढ़ विश्वास कर सकते हैं कि इब्रानियों का लेखक यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी था। उसकी परिष्कृत यूनानी, उसके यूनानी दृष्टिकोण में पालन पोषण होने का शक्तिशाली प्रमाण है। और उसका शब्द ज्ञान और शैली भाषा के ऊपर उसकी प्रवीणता का प्रमाण है जो कि यहाँ तक लूका के साहित्य को भी पीछे छोड़ देती है।

जुनूनी बौद्धिकता – न केवल इब्रानियों का लेखक एक यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी, अपितु हम अपने पार्श्वचित्र में यह भी सम्मिलित कर सकते हैं कि वह एक भावुक रूप से बौद्धिक व्यक्ति भी था। व्याख्याकार व्यापक तौर से स्वीकार करते हैं कि इब्रानियों का लेखक एक बुद्धिजीवी था। धर्मवैज्ञानिक यह विवाद करते हैं कि इब्रानियों नए नियम में पाए जाने वाली अन्य पत्रियों से कहीं ज्यादा जटिल है। सच्चाई तो यह है कि, लेखक ने स्वयं परिष्कृत धर्मवैज्ञानिक चिन्तनों की प्राथमिकता के ऊपर इब्रानियों 5:13-14 जैसे संदर्भों में ध्यान दिया है जहाँ पर यह इंगित किया गया है कि भले को बुरे से भिन्न करने के लिए, मसीह के अनुयायियों को सैद्धान्तिक रूप से परिपक्व हो जाना चाहिए।

> **इब्रानियों के पत्र की विषय-वस्तु से, ऐसी बहुस सी बातें हैं जिन्हें हम लेखक के बारे में कह सकते हैं। उनमें से एक यह है कि वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है। वह सेप्टुआजिन्त के प्रथम पृष्ठ से अन्तिम पृष्ठ तक, अच्छी तरह जानता है, जो कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है। वह जानता है कि कैसे मूलपाठ को उन तरीकों के साथ जोड़ना है जो कि पारम्परिक यहूदी श्रोताओं के लिए प्रेरक थे। हो सकता है कि वह एक यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी लेखक हो, हो सकता है कि यूनानी दृष्टिकोणवादी श्रोताओं को लिख रहा हो। जब मैं यह कहता हूँ कि, "यूनानी दृष्टिकोणवादी यहूदी," तो मेरे कहने का अर्थ यूनानी भाषा-बोलने वाले से है और शायद हो सकता है कि वह प्रवासी लोगों में से हो, परन्तु वह अपनी यहूदी परम्परा के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध हो और उसे पवित्रशास्त्र का अच्छा ज्ञान हो।**
>
> **- डा. क्रेग ऐस किनर**

यद्यपि इब्रानियों के लेखक को एक बुद्धिजीवी माना जाना चाहिए, परन्तु वो एक ठण्डे, शैक्षणिक कार्य से अलग नहीं है। वह गंभीरता से मसीही विश्वास के प्रति जुनूनी है। उसकी साथी मसीहियों के लिए भक्ति और जुनून उसके लेखों में स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

इब्रानियों 10:33-34 में वह जिस तरह से अपने श्रोताओं के ऊपर जोर देता है उसे सुने:

> **कभी कभी तो यों कि तुम निन्दा और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कभी यों, कि तुम उनके साझी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी। क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और अपनी सम्पत्ति भी आनन्द**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

से लुटने दी; यह जानकर कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली सम्पत्ति है (इब्रानियों 10:33-34)।

कुछ इसी तरह से, अध्याय 12:1-2 में वह अपने जुनून को मसीह के लिए प्रगट करता है जब वह ऐसा कहता है कि:

इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा (इब्रानियों 10:1-2)।

इस तरह के और इसी के सदृश्य संदर्भों को बिना यह जाने पढ़ना अत्यन्त कठिन है कि यह लेखक शायद ही एक अवैयक्तिक विद्वान रहा होगा। वह मसीह और श्रोताओं के बारे में भावुक था। यदि हम उसके इस जुनून को खो दें, तो हम इस पुस्तक की प्रमुख विशेषताओं में से एक को खो देंगे।

हम लेखक के बारे में और भी क्या सीखते हैं वह यह है कि उसे उन लोगों के बारे में वास्तव में चिन्ता है जिन्हें वह लिख रहा और प्रचार कर रहा था। वह उनकी आत्मिक उदासीनता के प्रति चिंतित है, और इसलिए वह बारी बारी से फिर कमजोर होने या थक जाने या फिर यहाँ तक कि स्वधर्मत्याग के खतरे की ओर वापस आ जाता है। और इसी कारण से, वह निश्चित ही पवित्रशास्त्र का एक सर्वोत्तम धर्मशास्त्री और व्याख्याकार है, परन्तु इसी के साथ वह एक ऐसा व्यक्ति है जो उसके श्रोताओं को बहुत अच्छी तरह से जानता है, स्पष्टतः व्यक्तिगत् रूप से अच्छी तरह जानता है। वह वास्तव में उनके बारे में चिंतित है और वह उन सभी बातों को अनुप्रयोग कर रहा है जिन्हें वह धर्मविज्ञान की शब्दावलियों में, पवित्रशास्त्र की व्याख्या में और उनका उपयोग करके कर रहा है ताकि वह उनको उनकी आत्मिक तीर्थयात्रा में सहायता कर सके।

- डा. इक्कहार्ड स्हेनाबेल

-

इब्रानियों की पुस्तक की पृष्टभूमि के ऊपर हमारे विचार विमर्श में हमने अभी तक पुस्तक के लेखनकार्य के ऊपर ध्यान आकर्षित किया। अब हमें हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए: अर्थात् इब्रानियों के मूल श्रोता।

मूल श्रोता

इब्रानियों की पुस्तक स्पष्ट रूप से इसके श्रोताओं की पहचान उनके नाम, नगर या क्षेत्र के द्वारा नहीं करती है। परन्तु फिर भी, सामान्य शब्दों में, हम विश्वस्त हो सकते हैं कि लेखक ने एक विशेष तरह के श्रोताओं को लिखा जिनसे वह व्यक्तिगत् रूप से परिचित था। 13:19-24 में, लेखक ने अपने श्रोताओं को फिर से मुलाकात करने की मंशा से उन्हें निश्चित कराया है। उसने तीमुथियुस के लिए बोला, जिसे उसने "हमारा भाई" कह कर पुकारा और उसने इटली के लोगों के एक समूह का भी उल्लेख किया है, जिससे आभास होता है कि उसके श्रोता उसे जानते थे।

हम उसके मूल श्रोताओं के बारे में पाँच महत्वपूर्ण तथ्यों को देखेंगे जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए जब हम इब्रानियों की पुस्तक का अध्ययन करते हैं।

यहूदी

पहला, सोचने का एक कारण यह है कि कम से कम मूल पाठकों का एक बड़ा हिस्सा यहूदी था। इब्रानियों 1:1 इसे स्पष्ट कर देता है:

> **पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, (इब्रानियों 1:1)**

यहाँ पर लेखक संकेत देता है कि कैसे परमेश्वर ने स्वयं को पुराने नियम में इस्राएल के ऊपर प्रगट किया। परन्तु ध्यान दें कि उसने पुराने नियम के इस्राएलियों को "हमारे बापदादों" –लेखक और उसके श्रोताओं के पूर्वजों को कह कर पुकारा है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, तरतुलियन के समय से ही, जो लगभग 155 से 230 ईस्वी सन् के आसपास रहा, इस पुस्तक के साथ पारम्परिक शीर्षक *"प्रोस हिब्राईओस,"* अर्थात् "इब्रानियों के लिए" जुड़ा हुआ है।

यूनानी दृष्टिकोणीय यहूदी

दूसरा, यह भी संभावना है कि श्रोताओं का बड़ा समूह यूनानी दृष्टिकोणीय यहूदियों का रहा होगा। इब्रानियों की विषय-सूची यह इंगित करती है कि श्रोतागण उन धर्मवैज्ञानिक शिक्षाओं से परिचित थे जो कि पलिश्तीन से बाहर रहने वाले यहूदियों में पलिश्तीन के मध्य रहने वाले पारम्परिक यहूदियों के क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक मात्रा में सामान्य रूप से प्रचलित थी।

कुछ व्याख्याकारों ने यह निर्धारित करने की कोशिश की है कि पलिश्तीन के बाहर कहाँ पर श्रोतागण रहे होंगे। तथ्य यह है कि रोम के क्लेमेंट ने यह लगभग 95 ईस्वी सन् के आसपास ही एक ऐसी पुस्तक का संकेत दिया है जिससे कुछ लोगों ने यह सुझाव दिया है कि श्रोतागण रोम में रहते थे। इब्रानियों 13:24 इस दृष्टिकोण के समर्थन के लिए उपयोग किया जाता है क्योंकि यह "इटलीवालों" का उल्लेख करता है। इस तरह के सुझाव रूचिपूर्ण हैं, परन्तु अधिक से अधिक हम, विश्वासी किसी भी मात्रा के साथ यह कह सकते हैं कि, मूल पाठकों का एक बड़ा समूह यूनानी दृष्टिकोणीय यहूदियों का था जो कि पलिश्तीन से बाहर रहते थे।

अपरिपक्व

तीसरा, इब्रानियों के मूल श्रोता अपरिपक्व थे। उस तरीके को सुनिए जिसमें लेखक उनके बारे में इब्रानियों 5:12 में विवरण देता है:

> **समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? तुम तो ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए (इब्रानियों 5:12)।**

ध्यान दें कि श्रोतागण एक लम्बे समय से लेखक के कहे अनुसार "समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था" विश्वासी के रूप में जीवन यापन कर रहे थे। उन्हें सैद्धान्तिक शिक्षाओं में बड़ी प्रगति कर लेनी चाहिए थी। परन्तु जैसा कि लेखक ध्यान देता है, उन्हें अभी भी "परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए" जाने की आवश्यकता थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह बात काफी दिलचस्प है कि, यद्यपि श्रोतागण धर्मवैज्ञानिक रूप से अपरिपक्व थे, परन्तु फिर भी इब्रानियों की पुस्तक पूरे नए नियम में कुछ बहुत ही उन्नत, जटिल धर्मवैज्ञानिक को प्रस्तुत करती है। किस तरह से इस पुस्तक के ये गुण श्रोतागण की अपरिपक्वता के साथ सही आकार में लागू होते हैं? इस तरह की परिस्थिति के अर्थ को पता लगाने के लिए इस सर्वोत्तम तरीके को ध्यान में रखना चाहिए कि आरम्भिक मसीहियों ने पहली शताब्दी के यहूदी आराधनालयों में प्रयुक्त होने वाले एक सामान्य अभ्यास को अपना लिया था।

हम लूका 4:16, प्रेरितों के काम 13:15 और 1 तीमुथियुस 4:13 जैसे संदर्भों से यह सीखते हैं कि यहूदी आराधनालयों और मसीहियों की कलीसियाओं के अगुवे उनकी सभाओं में पवित्रशास्त्र के पठन और व्याख्या का निरीक्षण किया करते थे। इस लिए, इब्रानियों के लेखक ने नए नियम के कुछ सबसे अधिक जटिल लेखों को लिखा क्योंकि उसने यह अपेक्षा की कि कलीसिया के अगुवे उनकी सभाओं में उसकी पुस्तक की शिक्षा दें। अब, इब्रानियों 5:11 में, इब्रानियों के लेखक ने उसके श्रोतागणों को उनके "ऊँचा सुनने" अर्थात् सीखने में धीमे होने के प्रति उन्हें ताड़ना दी है। परिणामस्वरूप यह बहुत ज्यादा सम्भव है कि मूल श्रोतागणों का एक बड़ा समूह धर्मवैज्ञानिक रूप से अपरिपक्व रहा होगा क्योंकि उन्होंने अपने अगुवों को उचित सम्मान नहीं दिया था।

यह सुझाव इब्रानियों 13:17 से सत्यापित हो जाता है जहाँ पर लेखक ने उसके श्रोताओं को ऐसा कहा कि:

> **अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उन के समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठण्डी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं (इब्रानियों 13:17)।**

सताए हुए

चौथा, इब्रानियों के मूल श्रोता सताए हुए थे। मसीहियों के इतिहास में दो जाने-पहचाने सताव के समय पहली शताब्दी ईस्वी सन् में आए हैं, जिन्होंने इब्रानियों के मूल श्रोताओं के ऊपर, कम से कम अपरोक्ष रूप से ही सही, प्रभाव डाला होगा। ईस्वी सन् 49 में, रोमी सम्राट क्लौदियुस ने यहूदियों को रोम के नगर से निष्कासित कर दिया था। और ईस्वी सन् 64 में सम्राट नीरो ने रोम के आसपास के क्षेत्रों में मसीहियों को सताया था।

जैसा कि हम इब्रानियों की पूरी पुस्तक में पढ़ते हैं, तो यह प्रमाणित हो जाता है कि मूल श्रोताओं ने पहले ही अतीत में उत्पीड़न का सामना कर लिया था, उन में कुछ वर्तमान में भी दुखों को उठा रहे थे, और लेखक की अपेक्षा यह थी कि वो उनमें से और भी ज्यादा दुखों को उठाएंगे, शायद यहाँ तक कि भविष्य में, और भी गंभीरता के साथ।

अध्याय 10:32-35 में, लेखक हमारे ध्यान को दुखों की ओर आकर्षित करना चाहता था जिन्हें कम से कम उसके कुछ श्रोतागणों ने अतीत में अनुभव किया था:

> **परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दु:खों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे... इसलिए अपना हियाव न छोड़ो; क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है (इब्रानियों 10:32-35)।**

यहाँ पर हम देखते हैं कि लेखक ने श्रोताओं की उस शक्ति की प्रशंसा की है जब "[पहिले] दिनों में [उन्होंने] ज्योति पाकर" दु:खों के बड़े संघर्ष में स्थिर रह कर सताव का सामना किया था। परन्तु साथ ही उसने उन्हें उत्साहित किया कि वे "[उनके] हियाव न छोड़ें।" जिस यूनानी शब्द को यहाँ पर "हियाव" के लिए उपयोग किया गया है वह *प्राईसिया* है, जिसका कई संदर्भों में अर्थ "उत्साह," "हिम्मत," या गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

"बिना किसी डर" के है। शब्द का यह चुनाव यह सुझाव देता है कि श्रोतागण किसी तरह से सार्वजनिक या सरकारी सताव का सामना कर रहे थे, और वे अपनी हिम्मत को खोने की परीक्षा में थे।

अध्याय 13:3 में लेखक ने परोक्ष में ही वर्तमान सतावों की ओर संकेत दिया है जब उसने यह कहा कि:

> **कैदियों की ऐसी सुधि लो कि मानो उन के साथ तुम भी कैद हो; और जिन के साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उन की भी यह समझकर सुधि लिया करो कि हमारी भी देह है (अध्याय 13:3)।**

हम इस आयत से देख सकते हैं कि लेखक ने उसके श्रोताओं को यह उपदेश दिया कि कैदियों की ऐसी सुधि लो कि मानो [वे] उन के साथ तुम भी कैद हो।" और जिनके साथ "बुरा बर्ताव हुआ उनके लिए मानो वे [स्वयं दुखों] को उठा" रहे थे। यह स्पष्ट है कि उसके सारे श्रोताओं को अतीत में दुख नहीं उठाना पड़ा था।

अतीत और वर्तमान के सताव के अतिरिक्त, इब्रानियों के लेखक ने अध्याय 12:3-4 में यह स्वीकार किया है कि उसके श्रोता भविष्य में और भी ज्यादा दुखों के आने के खतरे का सामना कर रहे थे। उसके उपदेश को सुनिए:

> **इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो। तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो (इब्रानियों 12:3-4)।**

जैसा कि यह संदर्भ संकेत देता है कि, लेखक ने उसके श्रोताओं के विरूद्ध और ज्यादा सताव के आने की अपेक्षा की है, और वह उसके अनुभव के इस गुण के लिए गम्भीरता से चिन्तित था।

> **इब्रानियों के मूल श्रोताओं ने कई विषयों का सामना किया...जैसा कि लेखक अध्याय 10 में उल्लेख करता, उन्होंने विभिन्न प्रकार के दुखों का सामना किया था; उनमें से कइयों ने अपनी सम्पत्ति को गवाँ दिया था, उनमें से कइयों को कैद में डाल दिया गया था, वे कई तरह के सार्वजनिक उपहास के पात्र बन गए थे। और जब वह लिखता है तो वह इस समय भी अपने पाठकों से बिनती कर रहा था, कि वे तम्बू में से निकाल बाहर कर दिए जाने के कंलक को मसीह के लिए सहन करने के इच्छुक हों, जिसे वह पुराने नियम की शब्दावली में व्यक्त कर रहा है परन्तु शायद वह यहूदी आराधनालय से बाहर कर दिए जाने का अर्थ रखता है, और यदि उन्हें यरूशलेम की ओर जाना होता, तो मन्दिर में से बाहर कर दिए जाते, जिसके लिये मैं सोचता हूँ कि वह अभी भी खड़ा हुआ था जब उसने इस पत्र को लिखा। परिणामस्वरूप, वहाँ पर इस तरह के सतावों के कई प्रकार थे जिनका वे सामना कर रहे थे। वह अध्याय 12 में कहता है कि उनका सताव उस बिन्दु तक नहीं पहुँचा था जिसमें उन्हें लहू बहाना पड़ा हो, और फिर भी ऐसा जान पड़ता है कि वह उनकी आवश्यकता के प्रति आश्वस्त होते हुए परिचित है कि वे मृत्यु के डर से स्वतन्त्र कर दिए गए हैं, जब वह अध्याय 2 में कहता है कि, यीशु मसीह की विजय के द्वारा ऐसा हुआ है। इसलिए, हो सकता है कि बहुत अधिक तीव्र, हिंसा से भरा हुआ सताव क्षितिज पर खड़ा हुआ था।**
>
> **- डा. डेनिस ई, जॉनसन**

स्वधर्मत्याग के निकट होना

पाँचवाँ, जब इब्रानियों के श्रोता सताव का सामना कर रहे थे, तो उनमें से कम से कम कुछ स्वधर्मत्याग की निकटता में थे। सामान्य तौर पर सताव के द्वारा हतोत्साहित या कमजोर होने की अपेक्षा, वे पूरी तरह से मसीह से दूर होने के खतरे में थे। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 10:26-27 में हम इस चेतावनी को पढ़ते हैं:

क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा (इब्रानियों 10:26-27)।

हमें यहाँ पर स्पष्ट होने की आवश्यकता है कि इब्रानियों के लेखक का लघुपापों या छोटे पापों के बारे में कोई सरोकार नहीं है। उसने उसके श्रोताओं को गंभीरता से चेतावनी दी है क्योंकि वे जो मसीह से पूरी तरह दूर हो जाते हैं उनके "पापों के लिए फिर कोई बलिदान नहीं" बचा। जब लोग मसीही विश्वास का त्याग करते हैं, जैसा कि इब्रानियों के मूल श्रोताओं में से कुछ करने की परीक्षा में थे, तो उन्होंने ये प्रमाणित किया उनमें ऐसा विश्वास कभी नहीं था जो बचा सकता है। और इसी कारण से, उनमें केवल अब "एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन" जो कि "परमेश्वर के विरोधियों" के लिए बाकी बची हुई है।

जैसा कि हम हमारे अगले अध्याय में उल्लेख करेंगे, ये और ऐसे ही अन्य इसके जैसे संदर्भ ऐसा अर्थ नहीं देते हैं कि सच्चे विश्वासी अपने उद्धार को खो सकते हैं। इसकी अपेक्षा, ये आयत उनकी ओर संकेत देती है जो विश्वास में बने रहते और इसकी कई तरह की आशीषों का अनुभव लेते हैं, परन्तु बिना किसी नवजीवन और धर्मीकरण के। सभी बातों में, यह प्रमाणित है कि इब्रानियों के मूल श्रोताओं में कुछ गंभीर रूप से विश्वास को छोड़ने की परीक्षा में पड़े हुए थे।

अब क्योंकि हमने इब्रानियों की पुस्तक की पृष्टभूमि की जाँच पुस्तक के लेखक और इसके मूल श्रोताओं के ऊपर ध्यान देने से कर ली है, हमें अब हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए जो कि: उस तिथि से है जब इब्रानियों को लिखा गया था।

तिथि

यद्यपि इब्रानियों की सही तिथि की अनिश्चित बनी हुई है, परन्तु इस पुस्तक की आरम्भिक और नवीनतम तिथियों को अपेक्षाकृत दृढ़ता से स्थापित किया जा सकता है। हम सर्वप्रथम इस पुस्तक की आरम्भिक सम्भावित तिथि या *टरमिनुस अ क्यो,* की ओर और फिर नवीनतम सम्भावित तिथि *टरमिनुस ऐड क्युम* की ओर देखेंगे। ये तिथियाँ अर्थात् दोनों को कुछ सीमा तक साहस के साथ पवित्रशास्त्रीय और ऐतिहासिक प्रमाणों का उपयोग करते हुए निर्धारित किया जा सकता है।

एक तरफ तो, इब्रानियों 13:23 इस पुस्तक की आरम्भिक सम्भावित तिथि की पुष्टि करने में सहायता करता है। इस आयत में लेखक ने ऐसा लिखा है कि:

तुम्हें यह ज्ञात् हो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा (इब्रानियों 13:23)।

यहाँ पर हम देखते हैं कि "तीमुथियुस [हाल ही में] कैद से छूट" गया है। हम नए नियम में कहीं ओर तीमुथियुस के कैद में डाले जाने के बारे में नहीं सुनते हैं। सच्चाई तो यह है कि, 2 तीमुथियुस की पुस्तक में, जो कि पौलुस का उसकी मृत्यु से ठीक पहले लिखा हुआ अन्तिम पत्र है, तीमुथियुस यात्रा करने और पौलुस के लिए आपूर्ति लाने के लिए स्वतंत्र मिलता है। तथापि, यह पुस्तक हमें बताती है कि जब इब्रानियों के पत्र को लिखा गया तब तीमुथियुस कैद में था और उसके वहाँ से छोड़ दिया गया था। इसी कारण से, इब्रानियों की पुस्तक पौलुस की मृत्यु के बाद में लिखी गई होगी, जो कि लगभग ईस्वी सन् 65 के आसपास हुई थी।

दूसरी तरफ, इस पुस्तक की नवीनतम सम्भावित तिथि को ईस्वी सन् 95 के आसपास रोम के क्लेमेंट के द्वारा इब्रानियों की पुस्तक को अपने पत्र, 1 क्लेमेंट में संकेत किए जाने के ठीक पहले होनी चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसके अतिरिक्त, कई टिप्पणीकारों ने यह ध्यान दिया है कि, इब्रानियों 5:1-3 जैसे संदर्भों में, लेखक ने वर्तमानकाल के वाक्यों का उपयोग महायाजक के बलिदान वाले कार्यों का उल्लेख करने के लिए किया है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि बाकी की पुस्तक में लेखक निरन्तर यूनानी भाषा के भूतकाल के वाक्यों का उपयोग करता है जब वह अतीत की घटनाओं की ओर संकेत करता है। परिणामस्वरूप, संभावना यह है कि ये महायाजकीय गतिविधियाँ जब इब्रानियों को लिखा गया तो उस समय भी चल रही थीं।

इसके अतिरिक्त, 8:13 में, लेखक ने उसके श्रोताओं को उत्साहित किया है कि वे परमेश्वर द्वारा मूसा के साथ स्थापित "लुप्तप्राय" बलिदान की गतिविधियों की ओर न मुड़ें। उसने समझाया कि नई वाचा के आलोक में, इन गतिविधियों का शीघ्र "मिट जाना" अनिवार्य है। हम जानते हैं कि महायाजक की गतिविधियाँ, और लेवीयों की बलिदान प्रणाली पूरी की पूरी, ईस्वी सन् 70 में आकर रूक गई, जब रोमियों ने यरूशलेम और इसके मन्दिर को नष्ट कर दिया। परिणामस्वरूप, ये प्रमाण इब्रानियों के लिए एक ऐसी तिथि का सुझाव देते हैं जो कि पौलुस की मृत्यु ईस्वी सन् 65 के आसपास और ईस्वी सन् 70 में मन्दिर के नाश होने से पहले की है।

इब्रानियों के हमारे अध्याय की पृष्टभूमि और उद्देश्य के ऊपर हमारे इस अध्याय में, हमने इब्रानियों की पुस्तक की पृष्टभूमि के कई गुणों को देख लिया है। अब, हम इस पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को सम्बोधित करने की स्थिति में हैं। क्यों इब्रानियों की पुस्तक को लिखा गया?

उद्देश्य

यह कहना उचित होगा कि इब्रानियों जैसी लिखी हुई एक लम्बी और जटिल पुस्तक की तरह कोई भी एक पुस्तक के कई उद्देश्य ध्यान में रख कर लिखी जाती है। परन्तु इस अध्याय के लिए, हम प्राथमिक तौर पर इस पुस्तक के व्यापक उद्देश्य को सारांशित करने के लिए रूचि रखते हैं। इस पुस्तक के प्रत्येक अंश का स्वयं ही महत्व है, और हम इन महत्वों को हमारे अगले अध्याय में देखेंगे। परन्तु इस समय, हम यह देखना चाहते हैं कि कैसे यह पुस्तक पूरी तरह एक ऐसी रूपरेखा में निर्मित की गई थी जो विचारधाराओं, व्यवहारों और मूल श्रोताओं की भावनाओं को प्रभावित करे।

व्याख्याकारों ने इब्रानियों की पुस्तक के व्यापक उद्देश्यों को कई तरीकों से सारांशित किया है। परन्तु हमारे अध्ययन के लिए, हम इब्रानियों के मूल उद्देश्य का इस तरह से वर्णन करेंगे:

> **इब्रानियों के लेखक ने उसके पाठकों को ये उपदेश देने के लिए लिखा कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।**

लेखक के उद्देश्य का इस तरह का विवरण हमें इब्रानियों की पुस्तक में पाए जाने वाले मुख्य विचारों की ओर उन्मुख करने में सहायता करता है।

जैसा कि हमें अभी अभी सुझाव दिया है, कि इब्रानियों के लेखक ने उसके श्रोताओं को उपदेश देने के लिए लिखा। जिस तरह से लेखक ने स्वयं को इस पुस्तक के 13:22 में चित्रित किया है उसे सुनें:

> **हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि इन उपदेश की बातों को सह लो, क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है (इब्रानियों 13:22)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यहाँ पर ध्यान दें कि लेखक उसकी पुस्तक को "उपदेश की बातों" के रूप में प्राप्त करने वाले उसके श्रोताओं को "बिनती [करते हुए]" लिख रहा है। ये शब्द "मैं तुम से बिनती करता हूँ" यूनानी क्रिया *पाराकालीयो*, से आते हैं जो कि अनुवादित यूनानी संज्ञा "उपदेश" इसी वाक्य में आए हुए शब्द का मौखिक रूप है।

उपदेश की शब्दावली का तात्पर्य "वक्ता के पक्ष में बुलावा देने" या फिर "किसी को वक्ता के दृष्टिकोण पर ध्यान देने के लिए बुलाहट देने" से है। यही भाव यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की लूका 3:18 में पाए जाने वाली तात्कालिक, प्रेरक आवश्यक पश्चाताप की बुलाहट के लिए उपयोग की गई है।

दिलचस्प बात यह है कि, "उपदेश की बातें" वाक्यांश प्रेरितों के काम 13:15 में प्रगट होता है जहाँ पर पिसिदिया के अन्ताकिया के यहूदी आराधनालय के लोगों ने पौलुस और उसके साथियों को निमंत्रण दिया कि वे उन्हें पवित्रशास्त्र के पठन् उपरान्त "उत्साह का उपेदश" दें। यह सम्भावना अधिक है कि शब्द "उपदेश की" - "बातें" – या सन्देश पहली-शताब्दी में जिसे हम आज के समय में धर्मोपदेश कहते हैं, के लिए तकनीकी रूप से निर्धारित उपनाम था।

> **ठीक है, लेखक अपने लेखनकार्य को उपदेश की बातें कह कर पुकारता है – जैसा कि यह अध्याय13:22 में मिलता है – और इसका अर्थ यह है कि इब्रानियों एक उपदेश है; यह एक धर्मोपदेश के जैसा है। और इसलिए आलंकारिक शैली का उपयोग श्रोताओं को यीशु के प्रति उसे परमेश्वर का पुत्र और अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हुए, उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की वचनबद्धता के लिए मूल रूप से एक औजार है। परिणामस्वरूप, इब्रानियों के पत्र की आलंकारिक शैली, या इब्रानियों का धर्मोपदेश, लेखक को विषयों की व्याख्या करने की, यहूदी पवित्रशास्त्र की टीका करने की अनुमति देता है – अर्थात्, यहूदी पवित्रशास्त्र की व्याख्या इस रीति से की जाए जो कि अर्थपूर्ण हो – और तब इसे उस सशक्त तरीके से प्रस्तुत करें जिसमें श्रोता इसे स्पष्ट रूप से समझ जाए कि लेखक उसे क्या कहना चाहता है। वह चाहता है कि वे उस उद्धार का अनुसरण करते रहें जिसे उन्हें मसीह ने प्रदान किया है, जिसे मसीह में परमेश्वर ने प्रदान किया है।**
>
> **- डा. फ्रेडरिक लौंग**

नए नियम में दी हुए प्रत्येक पत्री या पत्र में उसके श्रोताओं के लिए उपदेश दिए हुए हैं। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक नए नियम के अन्य पत्रों से अलग, इसके उपदेशों की तीव्रता के कारण खड़ा होता है।

लेखक के उद्देश्य का पता लगाने के लिए, आइए हम उपदेशों की तीव्रता को और अधिक निकटता से देखें जो कि इस पुस्तक में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। और तब, हम इन उपदेशों के लक्ष्यों की जाँच करेंगे, कि कैसे लेखक ने यह आशा की कि उसके श्रोता प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। आइए सबसे पहले लेखक की उसके श्रोताओं के लिए उपदेश की तीव्रता को देखें।

उपदेशों की तीव्रता

लेखक उपदेशों की तीव्रता से जो कुछ हमें कहना चाहता हैं उसके बारे में और ज्यादा आगे देखने के लिए, हम दो विषयों के ऊपर ध्यान देंगे: पहला, इस पुस्तक में उपदेशों की आवृत्ति, और दूसरा, इन उपदेशों के साथ उसके अलंकार की शैली का जुड़ा होना। आइए उपदेशों की आवृत्ति की जाँच करते हुए आरम्भ करें।

आवृत्ति

लेखक के उपदेशों की आवृत्ति हमारी उसके सन्देश को समझने की आवश्यकता में सहायता करती है। ये उपदेश कई बार अस्पष्ट दिखाई देते हैं, परन्तु कम से कम 30 बार वे स्पष्ट प्रगट होते हैं। कई घटनाओं में, लेखक ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उस बात का उपयोग किया है जिसे यूनानी व्याकरणकार "उत्साह वर्धक संभाव्य" कह कर पुकारते हैं। ये मौखिक रूप आग्रह या अर्थ देते हैं कि अक्सर इनका अनुवाद "आइए हम" इसे या उसे करें में किया जाता है। उदाहरण के लिए, 4:14, 16 में, हम ऐसे ही दो उपदेशों को पढ़ते हैं:

> **आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें...इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो (इब्रानियों 4:14, 16)।**

लेखक अपने श्रोताओं को निर्देशात्मक आदेश का उपयोग करके भी उपदेश देता है, जिन्हें हम अक्सर परोक्ष आदेश के रूप में अनुवाद करते हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 12:12-16 में, हम इन्हीं उपदेशों की श्रृंखला को पढ़ते हैं:

> **इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ... सब से मेल मिलाप रखने, और... पवित्रता के खोजी हो ... ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे... ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी या एसाव की नाई अधर्मी हो (इब्रानियों 12:12-16)।**

कई कारणों में से एक यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कैसे अक्सर लेखक ने परोक्ष में उसके श्रोताओं को उपदेश दिया परन्तु उसकी पुस्तक के जटिल धर्मवैज्ञानिक आत्मचिन्तन ने अक्सर लेखक के लेखनकार्य को अस्पष्ट कर दिया था। वह मात्र उसके श्रोताओं को धर्मवैज्ञानिक सिद्धान्तों को ही सूचित नहीं करना चाहता था। उसने उन्हें सैद्धान्तिक रूप से सूचित किया ताकि वह उन्हें विभिन्न व्यवहारों और कार्यों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सके। यही कुछ उसके कहने का अर्थ था जब उसने यह कहा कि उसकी पुस्तक "उपदेशों की बातें" थी। यदि हम इस अत्यावश्यकता को ध्यान में न रखें, तो हम इब्रानियों की पुस्तक के एक महत्वपूर्ण आयाम को गवाँ देंगे।

हमने यह देख लिया है कि कैसे लेखक की उपदेशों की तीव्रता उस आवृत्ति में प्रगट हुई है जिसमें उसने इसके श्रोताओं को उपदेश दिया है। अब, आइए, हम इस बात पर ध्यान दें कि कैसे लेखक की अलंकारिक शैली भी उसके श्रोताओं को उसकी उपदेश देने की इच्छा को प्रगट करती है।

अलंकारिक शैली

इब्रानियों की पुस्तक को अक्सर उच्च अंलकारिक व्यक्तव्य के रूप में चित्रित किया गया है। ऐसा कहने से हमारा यह अर्थ है कि यह अत्यधिक साहित्यिक औजारों का उपयोग करती है जो कि प्रेरक भाषणकला या पहली शताब्दी में आवश्यक वाद विवाद से जुड़े हुए थे। इनमें से कई अलंकारिक औजार नए नियम की पुस्तक में यदा कदा प्रगट होते रहते हैं, परन्तु हम इन्हें इब्रानियों में अक्सर सबसे ज्यादा पाते हैं।

> **इब्रानियों कदाचित् नए नियम का एक सर्वोत्तम उदाहरण है जिसमें एक लेखक जिसके पास शक्तिशाली साहित्यिक और अलंकारिक कौशल पाया जाता है, और यह अलंकारिक शैली वास्तव में लेखक को उसका उद्देश्य प्राप्त करने में सहायता करती है। वह मसीह की सर्वोच्चता को प्रदर्शित करने की और नए नियम को पुराने नियम के ऊपर स्थापित करने की कोशिश कर रहा है, और वह इसे बहुत ही शक्तिशाली प्रेरक साहित्यिक वाद विवाद के रूप में करता है। और वह इसे प्राप्त करने के लिए बहुत से विभिन्न संरचनात्मक गुणों को उपयोग करता है...अत्यधिक, सुन्दरता से संरचित किए हुए, अलंकारिक व्यक्तव्य को उसके**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

श्रोताओं के ध्यान को आकर्षित करने के लिए उपयोग करते हुए, और फिर उस तर्क से उन्हें उत्तर रहित करते हुए जिन्हें वह उनके लिए उपयोग कर रहा है।

- डा. मार्क ऐल, स्ट्रोस

एक अलंकारिक व्यक्तव्यिक औजार को यूनानी भाषा में *सियनक्रीसिस* कह कर पुकारा जाता है, जो कि दो या इससे अधिक चीजों के मध्य में की जाने वाली तुलना श्रोताओं को उत्तर रहित करते हुए वक्ता के दृष्टिकोण की पुष्टि करती है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों की पुस्तक में *सियनक्रीसिस* अध्याय 7:11-28 में प्रगट होते हैं। वहाँ पर, लेखक यह तर्क देता है कि यीशु राजकीय याजक मलिकिसिदक की रीति पर हुआ, जो कि एक याजक और राजा के रूप में उत्पत्ति की पुस्तक में उल्लिखित किया गया है। परन्तु केवल अपनी मान्यता की पुष्टि करने की अपेक्षा, इब्रानियों का लेखक उसके श्रोताओं को मसीह और मलिकिसिदक के मध्य में आठ-बिन्दुओं वाली मजबूर कर देने वाली तुलना को देता है: जो उसके माता पिता, वंशावली, जन्म, मृत्यु, पद, कार्य, ख्याति और प्राप्तियों से सम्बन्धित है। ये विस्तार सहित किए हुए वर्णन उस दावे के बारे में सन्देह को मिटाने के लिए रूपरेखित किए गए थे कि यीशु ही महान्, राजकीय महायाजक था।

इब्रानियों की पुस्तक में पाया जाने वाला एक और अलंकारिक व्यक्तव्यिक औजार *इरजाम्पला* के नाम से जाना जाता है। *इरजाम्पला* उदाहरणों और दृष्टान्तों की सूची है जो कि एक के बाद एक आते चले जाते हैं जो किसी एक विशेष दृष्टिकोण के लिए प्रेरक तर्क का निर्माण करते हैं। भाषण की यह तकनीक इब्रानियों 11 में विश्वासयोग्यों की जानी पहचानी सूची में प्रगट होती है। वहाँ पर लेखक ने नामों को सूची दी है: हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, साराह, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, इस्राएली, राहाब, गिद्दोन, बाराक, शिमशौन, यिफतह, दाऊद, शमूएल, और अन्य भविष्यद्वक्ता। इस लम्बी सूची की रूपरेखा श्रोताओं को प्रेरित करने के लिए निर्मित किया गया है कि परमेश्वर के सेवकों को उनके सताव के पूरे समय में विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए।

इब्रानियों की पुस्तक में उपयोग किया जाने वाला एक तीसरा अलंकारिक व्यक्तव्यिक औजार इब्रानी अभिव्यक्ति *कौल वाहोमेर* के नाम से जाना जाता है। यह अभिव्यक्ति दोनों अर्थात् यूनानी-रोमन और रब्बियों की परम्पराओं में जानी जाती है और इसे "कमजोर से भारी," "कम से ज्यादा" या "सामान्य से जटिल" में अनुवाद किया जा सकता है। इस तरह का तर्क एक साधारण आधार-वाक्य से आरम्भ होता है जो कि श्रोताओं के द्वारा विवादित नहीं है। यह तब बहुत ज्यादा जटिल निष्कर्ष को निर्मित करता है जिसे श्रोताओं ने आरम्भ में सन्देह किया था, परन्तु वे अब अधिक आसानी से स्वीकार कर सकते हैं। सीधे शब्दों में कहना, यह तर्क कहता है कि क्योंकि सामान्य आधार-वाक्य सत्य है, तब निश्चित ही और अधिक कठिन निष्कर्ष भी सत्य ही होगा। सुनिए उस तरीके को जिसमें इब्रानियों 10:28-29 में ये अलंकारिक व्यक्तव्यिक औजार प्रगट होता है:

जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला, दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा? (इब्रानियों 10:28-29)।

यहाँ पर लेखक एक ऐसे आधार-वाक्य के साथ में आरम्भ करता है जिसे श्रोता समझते थे: उन लोगों के लिए सजा जिन्होंने मूसा की व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया मृत्यु थी। तब वह उसके श्रोताओं को आगे यह कहते हुए तर्क देता है कि "वह कितने" और भी अधिक भारी दण्ड के योग्य ठहरेंगे जिन्होंने जो कि मूसा से बड़ा था - "परमेश्वर के पुत्र" को "पाँवों तले रौंदा" है।

ये उदाहरण हमें लेखक की मंशा की अत्यावश्यकता को देखने में सहायता करते हैं। उस पूरी तरह दृढ़ विश्वास है कि उसके श्रोताओं ने बहुत गम्भीर परिस्थितियों का सामना किया है और अब उनके लिए समय आ गया था कि वे कुछ बहुत ही कठिन निर्णयों को लें। परिणामस्वरूप, उसने उनसे हर सम्भव तरीके से बिनती की और प्रेरित किया कि वे सही चुनाव को ही करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे लेखक का उद्देश्य उसके उपदेशों की तीव्रता के द्वारा उन्हें मजबूत करने का था, हमें अब इस पुस्तक के एक दूसरे गुण की ओर मुड़ना चाहिए जो कि: उपदेशों के लक्ष्य से है।

उपदेशों का लक्ष्य

हमने पहले ही देख लिया है कि इब्रानियों की पुस्तक का व्यापक उद्देश्य निम्न तरह से परिभाषित किया जा सकता है:

इब्रानियों के लेखक ने उसके पाठकों को यह उपदेश देने के लिए लिखा कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

जैसा कि यह परिभाषा पुष्टि करती है, लेखक के उपदेशों का लक्ष्य द्वि-भागी था। वह चाहता था कि उसके श्रोता स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें और वह यह भी चाहता था कि वे यीशु को मसीह मानते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। आइए हम इस बात पर ध्यान दें कि कैसे लेखक ने उसके श्रोताओं से बिनती की कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दें।

स्थानीय शिक्षाओं को अस्वीकार करना

हमने ध्यान दिया है कि इब्रानियों के श्रोताओं ने सताव से दुखों का सामना किया था और उनका सताव उन्हें स्वधर्मत्याग की परीक्षा में डाल रहा था। परन्तु यह वह परीक्षा नहीं थी जिसकी हमने पहले कल्पना की थी। ऐसा आभास होता है कि जिस समय इब्रानियों को लिखा गया, मसीही विश्वासी सुरक्षा को पा सकते थे यदि वे अपने मसीही विश्वास की विशेष मान्यताओं को इन्कार कर देते और स्वयं की पहचान उनके समय के स्थानीय यहूदी समुदाय के साथ और निकटता से करते।

पहली शताब्दी में, यहूदी अक्सर विशेष करों का भुगतान किया करते थे, और उन्होंने समय समय पर सतावों से दुखों को उठाया था। परन्तु अक्सर, रोम साम्राज्य में यहूदी समुदाय अपने विश्वास को पालन करने के लिए स्वतंत्र थे। आरम्भ में, ऐसा सत्य मसीहियों के साथ भी था क्योंकि उन्हें यहूदीवाद के साथ बड़ी निकटता से पहचाना गया था। परन्तु समय के व्यतीत होने के साथ ही, मसीहियों की पहचान एक यहूदी सम्प्रदाय के साथ हुई जो कि खत्म होने लगी थी। सच्चाई तो यह है कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक यह उल्लेख करती है कि यहाँ तक कि पौलुस के दिनों में भी, यहूदी आराधनालयों ने मसीह के अनुयायियों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और स्थानीय अधिकारियों को उत्साहित किया था कि वे उनके साथ दुर्व्यवहार करें। सभी सम्भावनाओं में, यह ऐसी परिस्थिति थी जिसका सामना इब्रानियों के मूल श्रोतागण कर रहे थे। और उनके लम्बे समय तक बने रहने वाले दुखों ने उनकी स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं को स्वीकार करने की परीक्षा में डाल दिया था जो कि मसीही विश्वास के विपरीत थी।

दिलचस्प बात यह है कि, इब्रानियों का लेखक ऐसे विषयों को बिल्कुल भी सम्बोधित नहीं करता है जो कि यहूदी पाखण्ड और विधिपरायणता से सम्बद्ध है। ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय थे, परन्तु ये इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य सरोकार नहीं थे। इसकी अपेक्षा, लेखक ने प्राथमिक तौर पर गलत मान्यताओं और व्यवहारों का निपटारा किया है, विशेष करके वे जो कि यहूदी समुदाय से बाहर पलिश्तीन यहूदीवाद की मुख्यधारा में विकसित हुई थी। इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 13:9 में क्या कुछ लिखा उसे सुनें:

नाना प्रकार के विचित्र उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ (इब्रानियों 13:9)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस आयत में, लेखक ने "अनुग्रह में दृढ़ बने रहना' की तुलना "अनुष्ठानिक भोजन" के द्वारा दृढ़ होने से की है। यह विशेष ध्यान पर्याप्त मात्रा में उचित जान पड़ता है। परन्तु इस पर भी ध्यान दें कि यह केवल एक ही उदाहरण है जिसे हम "नाना प्रकार के विचित्र उपदेश" कह कर पुकार सकते हैं। दूसरे शब्दों में, असामान्य और विचित्र शिक्षायें स्थानीय यहूदी समाजों में सिखाई जा रही थीं। इसलिए, ये कौन सी "विचित्र शिक्षायें" थी जिनका अनुसरण करने के लिए श्रोतागण परीक्षा में पड़ गए थे।

अन्तिम शताब्दी के दूसरे आधे हिस्से में, कई सहायतापूर्ण अन्तर्दृष्टियाँ इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए कुमरान नामक स्थान पर मृतक सागर के कुडण्ल पत्रों की खोज के बाद प्रकाश में आए हैं। दस्तावेजों के लम्बे-समय तक खोए रहने में पुराने नियम के मूलपाठ भी सम्मिलित हैं, परन्तु साथ ही अतिरिक्त-बाइबल आधारित लेख भी पाए गए हैं जो मृतक सागर के निकट रहते हुए निर्वासित यहूदी समुदाय की शिक्षाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें *समुदाय के लिए नियम , दमिश्क की वाचा, युद्ध कुण्डल पत्र, मलिकिसिदक के ऊपर मिदराश,* साथ ही 1 हनोक के ऊपर लिखे हुए खण्डों का एक संग्रह जिसे "पहरेदार की पुस्तक" और "स्वप्नों की पुस्तक" के नाम से पुकारा जाता है, सम्मिलित है। इन पुस्तकों में ऐसी शिक्षायें पाई जाती हैं जो कि बड़ी निकटता से इब्रानियों में सम्बोधित धर्मवैज्ञानिक विषयों के समानान्तर हैं।

अब, यह ध्यान देना अति महत्वपूर्ण है कि ये शिक्षायें केवल इसी समुदाय के लिए निर्धारित नहीं थीं। भूमध्य सागर के निकट रहने वाले संसार में अन्य यहूदी समुदायों में भी इसी तरह का दृष्टिकोण पाया जाता है। सच्चाई तो यह है कि, इफिसियों और कुलुस्सियों की पुस्तकें अपने स्थानों के तुलनात्मक विषयों का निपटारा करते हैं। तथापि, यह हमें इब्रानियों के कई उपदेशों को यहूदी मान्यताओं के विरूद्ध समझने में सहायता करेगा यदि हम यह ध्यान दें इनमें से कुछ समान्तर विषय दोनों अर्थात् इब्रानियों और कुमरान में पाए जाने वाली पुस्तकों में पाए जाते हैं।

> **कोई सन्देह नहीं है कि, कुमरान के रेगिस्तान में प्राप्त होने वाले मृतक सागर कुण्डल पत्रों के दस्तावेज बड़े ही आकर्षक हैं, और वे कट्टरपंथी यहूदी सम्प्रदाय का लेखनकार्य हैं जिन्होंने बार बार स्वयं को मुख्यधारा वाले यहूदी समुदाय, विशेष कर जो यहूदी मन्दिर में कार्यरत थे, के विरूद्ध परिभाषित किया है। और इस तरह से, कुछ सीमा में, ये इब्रानियों की पुस्तक के रूपक के रूप में पाए जाते हैं, ऐसा आभास होता है कि कुमरान के सम्प्रदाय के लोगों ने स्वयं को नई वाचा के अन्तर्गत नए मन्दिर के रूप में माना है। अब, पुराने नियम के अधिक अनुष्ठानिक पहलुओं के कारण, वहाँ पर बहुत सी असमानतायें पाई जाती हैं, क्योंकि कुमरान का समुदाय वास्तव में उनको खत्म करने की अपेक्षा इस तरीके से और अधिक मजबूत बनाना चाहता था जिसका सुझाव इब्रानियों का लेखक देता है।**
>
> **- डा. सिएन मैक्डोनग**

इस अध्याय के लिए, हम संक्षेप में केवल चार विषयों का ही उल्लेख करेंगे जो कि दोनों अर्थात् इब्रानियों और कुमरान के दस्तावेजों में पाए जाते हैं।

अनुष्ठानिक भोजन - सर्वप्रथम, हमने पहले ही ध्यान दे दिया है कि इब्रानियों 13:9 में, लेखक ने अनुष्ठानिक भोजन को खाने के बारे में एक विशेष उदाहरण के विरूद्ध बोला है।

कुमरान की बहुत सी प्रथाओं को *समुदाय के लिए नियम* नामक पुस्तक में विवरण दिया गया है। अन्य बातों के अतिरिक्त, कुमरान के समुदाय में नियमित रूप से पवित्र समुदायिक भोजन किया जाता था जिसमें वे विशेष रूप से अलग किए भोजन को खाते थे।

मूल शिक्षायें - दूसरे स्थान पर, इब्रानियों की पुस्तक में मूल शिक्षाओं के सम्बोधन का वर्गीकरण भी कुमरान के मूलपाठों में पाया जाता है।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 6:1-2 में, लेखक पश्चाताप, विश्वास, शुद्धीकरण के रीति रिवाज (या बपतिस्मों), हाथों को रखने, मृतकों में से जी उठने और शाश्वतकालीन न्याय का उल्लेख करता है। दिलचस्प बात

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह है कि, *समुदाय के लिए नियम* में कुमरान के *युद्ध के कुण्डल पत्र* एक बड़ी मात्रा में इन पर और इन जैसे विषयों के ऊपर ही ध्यान इस तरीके से देते हैं जो कि पलिश्तीन की मुख्यधारा यहूदीवाद से भिन्न थे।

स्वर्गदूत - तीसरे स्थान पर, कुमरान का साहित्य हमें इब्रानियों की पुस्तक में स्वर्गदूतों के ऊपर दिए हुए ध्यान को समझने में सहायता करता है। इब्रानियों की पुस्तक कई संदर्भों में कई बार स्वर्गदूतों के प्रति मान्यताओं को सम्बोधित करती है। ध्यानाकर्षण की यह प्रतिक्रिया उन मान्यताओं के परिणामस्वरूप है जो कि *समुदाय के लिए नियम, दमिश्क की वाचा* और *युद्ध के कुण्डल पत्र* और साथ ही *1 हनोक* के संग्रह जिसे "पहरेदार की पुस्तक" और "स्वपनों की पुस्तक" कह कर पुकारा जाता है, जैसे पुस्तक में दी हुई शिक्षाओं के सदृश्य हैं। ये पुस्तकें भले और बुरे स्वर्गदूतों की शक्तियों का गुणगान, उनको दिव्य प्रकाशन के सन्देशवाहक और उस प्रभाव के रूप में करती हैं जो कि उनका उनसे निम्न मानव प्राणियों के ऊपर था। ऐसा आभास होता है कि, इब्रानियों के मूल श्रोता इस तरह की शिक्षाओं के प्रति आकर्षित हो गए थे।

मलिकिसिदक – चौथे स्थान पर, कुमरान के दस्तावेज हमें उस असामान्य रूचि को समझने में सहायता करते हैं जो कि इब्रानियों के लेखक की पुराने नियम के चरित्र मलिकिसिदक के प्रति है।

एक लम्बे समय तक, व्याख्याकारों को यह व्याख्या करने में कठिनाई होती थी कि क्यों मलिकिसिदक और यीशु के मध्य में की गई तुलना इब्रानियों के लेखक के लिए इतनी महत्वपूर्ण है। परन्तु कुमरान में पाए जाने वाले एक मूलपाठ, जिसे अक्सर 11वें कुमरान मलिकिसिदक या *मलिकिसिदक के ऊपर मिदराश* के नाम से पुकारा जाता है, प्रायः झूठी शिक्षा देती है कि मलिकिसिदक एक स्वर्गीय प्राणी था जो कि प्रायश्चित के दिन की और अन्त में परमेश्वर के लोगों के लिए अन्तिम प्रायश्चित की उदघोषणा करने के लिए प्रगट होने वाला था। इन सभी प्रकटनों के कारण, इब्रानियों के मूल श्रोता इन या उन जैसे ही झूठी मान्यताओं के पीछे चलने की परीक्षा में पड़ गए थे।

यहूदी समुदायों में प्रचलित इस तरह की झूठी शिक्षाओं की पहचान हमें यह समझने में सहायता देती हैं कि क्यों इब्रानियों के लेखक ने उसके श्रोताओं को उपदेश दिया कि वे इन शिक्षाओं का विरोध करें और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

यहाँ पर मृतक सागर के कुण्डल पत्रों और इब्रानियों की शिक्षाओं में कई तरह की समानतायें हैं। कदाचित् इनमें से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण ये हैं कि दोनों समुदायों ने यह स्वीकार कर लिया था या उन्हें यह विश्वास हो गया था कि वे अन्त के समय में रह रहे थे, यह कि परमेश्वर का अन्तिम उद्धार घटित होने वाला था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इब्रानियों में हम देखते हैं कि परमेश्वर का उद्धार आ पहुँचा है, जबकि कुमरान में – या मृतक सागक के कुण्डल पत्रों में – वे अभी भी अपेक्षा कर रहे हैं कि यह किसी भी समय में घटित होने वाला है। परन्तु कदाचित् सबसे दिलचस्प तुलना इन दोनों के मध्य मलिकिसिदक के चरित्र को लेकर है। मलिकिसिदक, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इब्रानियों में लेखक मलिकिसिदक के ऊपर इस धर्मविज्ञान को विकसित करता है कि यीशु हारून की रीति पर महायाजक नहीं है, न ही पुराने नियम की परम्परा के ऊपर, अपितु मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक है, क्योंकि हम देखते हैं कि मलिकिसिदक एक वैधानिक महायाजक है जिसने उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के साथ भेंट की – और इसलिए, इस मलिकिसिदक की तुलना की गई है। ठीक है, मृतक सागर के कुण्डल पत्रों में, मृतक सागर का एक ऐसा कुण्डल पत्र है –जिसे 11वाँ कुमरान मलिकिसिदक के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी खोज मृतक सागर के कुण्डल पत्रों की 11वीं गुफा में हुई थी –जो कि इस मलिकिसिदक के पात्र को एक सामर्थी स्वर्गीय, महिमामयी, मसीह-सदृश्य चरित्र के रूप में चित्रित करता है जो कि उद्धार को लेकर आता है। इसलिए, यह एक दिलचस्प तुलना हैं क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मसीह मलिकिसिदक का प्रतिरूप इब्रानियों की पुस्तक में पाया जाता है, जो कि मृतक सागर के कुण्डल पत्रों में एक अपेक्षा किया जा रहा मसीह बन जाता है। और इसलिए इब्रानियों में पाए जाने वाले मलिकिसिदक और मृतक सागर के कुण्डल पत्रों में प्रगट होने वाले मलिकिसिदक के चित्र के मध्य के सम्बन्धों को लेकर विद्वान उलझन में पड़ जाते हैं। यह कितनी दिलचस्प तुलना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

- **डा. मार्क ऐल, स्ट्रोस**

इब्रानियों के उपदेशों के लक्ष्य मात्र श्रोताओं को यही बिनती करना नहीं है कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं का अस्वीकार कर दें। परन्तु इससे अधिक, लेखक यह चाहता है कि वे यीशु को मसीह स्वीकार करते हुए उसके प्रति निरन्तर विश्वासयोग्य बने रहें।

यीशु के प्रति विश्वस्त बने रहना

अपने श्रोताओं को यीशु के प्रति विश्वासयोग्य सेवा में बने रहने की बुलाहट के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, इब्रानियों के लेखक ने उसके उपदेशों को पाँच मुख्य भागों में संगठित किया है। हम अगले अध्याय में इनमें से प्रत्येक भागों के ऊपर कुछ विस्तार से देखेंगे। परन्तु इस स्थान पर प्रत्येक के केन्द्रीय विषयों को सारांशित करना सहायतापूर्ण होगा।

इब्रानियों 1:1-2:18 में, इब्रानियों के लेखक ने उसके श्रोताओं को बुलाहट दी है कि वे मसीह की सर्वश्रेष्ठता को स्वर्गदूतों के प्रकाशनों से उत्तम होना स्वीकार करें।

हमने पहले ही इस अध्याय में यह उल्लेख कर दिया है कि इब्रानियों की पुस्तक में स्वर्गदूतों के बारे में झूठी मान्यताओं के विरूद्ध बोला है। कई यहूदी लेखों में स्वर्गदूतों को शक्तिशाली, महिमामयी प्राणियों के रूप में गुणगान किया गया है जोकि दिव्य प्रकाशनों को अपने से निम्न मानव प्राणियों तक लेकर आए। स्वर्गदूतों के सम्मान ने उनके प्रति गम्भीर चुनौती को खड़ा कर दिया जो मसीह का अनुसरण कर रहे थे। यीशु लहू और माँस में आया। स्वर्गदूतों के प्रकाशनों की अपेक्षा कोई कैसे जो कुछ उसने बोला उसका अनुसरण कर सकता है? इब्रानियों के लेखक ने इस स्थानीय यहूदी शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिक्रिया पुराने नियम में से, और यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, और महिमा में पुनः वापस आने में प्रदर्शित करते हुए की, कि वह वास्तव में स्वर्गदूतों से सर्वश्रेष्ठ है।

इब्रानियों का दूसरा मुख्य भाग, 3:1-4:13 में, यह प्रदर्शित करता हुआ मिलता है कि, यीशु को मूसा के अधिकार से अधिक सर्वश्रेष्ठ मानना चाहिए।

यह प्रत्येक के लिए स्पष्ट था कि यीशु के अनुयायी किसी भी बलिदानात्मक अनुष्ठानों का पालन नहीं कर रहे थे जिसे परमेश्वर ने मूसा के द्वारा नियुक्त किया था। स्थानीय यहूदी समुदाय अक्सर मसीहियों को मूसा और उसके तरीकों की ओर मुड़ने के लिए बुलाहट देते थे। इब्रानियों के लेखक ने इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया यह पुष्टि करते हुए की है कि मूसा परमेश्वर का विश्वस्त सेवक था। परन्तु यीशु बहुत ही महान् था क्योंकि वह परमेश्वर का राजकीय पुत्र था।

मूसा और स्वर्गदूतों के साथ निपटारा कर लेने के बाद, इब्रानियों का लेखक 4:14-7:28 में मलिकिसिदक के महायाजकपन की ओर मुड़ता है।

इस भाग में, लेखक यह तर्क देता है कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सर्वश्रेष्ठ राजकीय याजक था। ऐसा आभास होता है कि, स्थानीय यहूदी समुदाय यह चाहते थे कि मूल श्रोता इस बात को अस्वीकार कर दें कि यीशु ही मसीह था क्योंकि उनकी यह मान्यता थी कि अन्तिम दिनों में यह महान् राजकीय महायाजक प्रगट होगा। प्रतिक्रिया स्वरूप, इब्रानियों के लेखक ने यह प्रदर्शित किया कि यीशु ही वह सच्चा राजकीय याजक था जो कि अन्तिम दिनों में पाप के शाश्वत प्रायश्चित के लिए प्रगट होने वाला था।

अध्याय 8:1-11:40 में, इब्रानियों के लेखक ने यीशु में नई वाचा की सर्वश्रेष्ठता के बारे में व्याख्या दी है।

स्थानीय यहूदी समुदाय की शिक्षाओं ने मसीहियों के इस दावे के बारे में यह सन्देह उत्पन्न कर दिया था कि यीशु यिर्मयाह के द्वारा प्रतिज्ञा की हुई वाचा की मध्यस्थता करने के लिए आया था। परन्तु इब्रानियों का लेखक यीशु की ओर संकेत देता है कि, सच्चाई तो यह है कि, वह नई वाचा का मध्यस्थ है।

अन्तिम मुख्य भाग, 12:1-13:25 में, इब्रानियों का लेखक कई तरीकों से यह विवरण देता है कि श्रोताओं को व्यवहारिक दृढ़ता को प्रयोग में लेने की आवश्यकता है।

यह भाग उपदेशों की एक लम्बी श्रृंखला, के साथ साथ इन उपदेशों की व्याख्या से मिलकर बनी हुई है। स्थानीय यहूदी समुदाय और अन्य स्थानों से अपने विश्वास के प्रति आने वाली चुनौतियों के आलोक में, लेखक ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसके श्रोताओं के लिए प्रेरणा से भरे हुए और उत्साहवर्धक सन्देश को लिखा है। उसने उन्हें यीशु को मसीह के रूप में मानते हुए यीशु में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशीषों को स्मरण दिलाते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए उपदेश दिया है।

इन उपदेशों के द्वारा, इब्रानियों के लेखक ने, सकारात्मक रूप से कहना, अपने श्रोताओं को विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए उत्साहित किया है। और कई बार उसकी भाषा बड़ी ही सौम्य, अनुनय-विनय करती हुई, उत्साह देती हुई है, अपितु, इसमें से कुछ, ज्यादा स्पष्ट, शेखी मारती हुई, भयावह है, हमारे लिए यह कितनी अधिक खतरनाक होती यदि हम, जो कि नई वाचा के उत्तराधिकारी हैं, प्रभु यीशु को नहीं जानते, महान् उद्धार की अवहेलना कर देते जिसे हमारे लिए ही प्रबन्ध किया गया है?" और इस तरह के मोर्चाबन्द तर्क, "यदि यह, तो और कितना," हमें इस पुस्तक में बारी बारी से दिखाई पड़ते हैं। और फिर यहाँ पर दो संदर्भ ऐसे हैं जिन्हें अक्सर "स्वधर्मत्याग संदर्भों" के रूप में इब्रानियों 6 और इब्रानियों 10 में इंगित किया गया है जो हमें उन लोगों के विरूद्ध चेतावनी देते हैं जिनका मसीह में गहरा अंगीकार करता हुआ विश्वास है – और ऐसा आभास होता है कि वे कुछ समय के लिए उसका अनुसरण कर रहे हैं – परन्तु फिर पीछे हट जाते हैं। और इसलिए, यहाँ तक कि पुराने नियम की कथात्मक कहानी के पठन् में भी, जैसा कि इब्रानियों 3 के अन्त में दिया हुआ है, लेखक यह कहता है कि, पुराने नियम के सन्तों के सदृश न हो जिन्हें मिस्र में से छुटकारा मिला और दासत्व में से बच गए परन्तु वे कभी भी सुनिश्चित रूप से प्रतिज्ञात् भूमि में प्रवेश नहीं कर पाए क्योंकि उन्होंने आज्ञा न मानी। वे रेगिस्तान में मर मिटे या एक पूरी पीढ़ी थोड़ा या ज्यादा रूप से मिटा दी गई। और इस तरह की ये पास्तरीय समानतायें जो ये प्रगट करती हैं कि उत्साह के लिए उसके ये प्रेरक मात्र कोमल या गुदगदी देने वाले नहीं हैं, अपितु उनमें मसीह की महिमा को पकड़े रखने की गरमाहट और उत्साह है जिसके परिणामस्वरूप ये उन्हें उस की ओर आकर्षित कर ले आए। परन्तु इसके साथ ही इसमें खतरा और चेतावनी भी है कि यह एक गम्भीर व्यवसाय है और आप इसके साथ खेलना नहीं चाहेंगे।

- डा. डी. ए. कारसन

सारांश

इब्रानियों की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के ऊपर इस अध्याय में, हमने इब्रानियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि के ऊपर देखा है, जिसमें लेखक, श्रोता और इसके लिखे जाने की तिथि भी सम्मिलित है। हमने साथ ही इब्रानियों के मूल उद्देश्य के ऊपर भी ध्यान यह जाँच करते हुए दिया है कि कैसे लेखक ने इस पुस्तक को उसके श्रोताओं को स्थानीय यहूदी शिक्षाओं से दूर होने और यीशु के मसीह मानते हुए उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए उपदेश दिया है।

इब्रानियों की पुस्तक नए नियम की पुस्तकों में एक सबसे ज्यादा चुनौती से भरी हुई पुस्तक है। यह इतनी ज्यादा सामग्री को प्रदान करती है कि हमें यह जो कुछ सिखाती है उसके एक छोटे से अंश से ज्यादा उजागर नहीं कर सकते हैं। तथापि, हम इसकी कई जटिल शिक्षाओं से लाभ को कई तरीकों से प्राप्त कर सकते हैं। मसीह के आधुनिक अनुयायी होने के नाते, हम भी कई तरह की परीक्षाओं को इस जीवन में परेशानियों से बचने के लिए यीशु के प्रति हमारे समर्पण का समझौता करने के लिए सामना करते हैं। परन्तु यदि हम हमारे हृदयों को यह सुनने के लिए खोल दें कि कैसे इब्रानियों का लेखक उसके मूल श्रोताओं को तात्कालिक उपदेश देता है, हम देखेंगे कि यह हमारे विश्वास में दृढ़ता से खड़े होने के लिए कितना महत्वपूर्ण है, चाहे हम किसी भी तरह के सताव का ही क्यों न सामना करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम